अध्याय

05

घर की याद

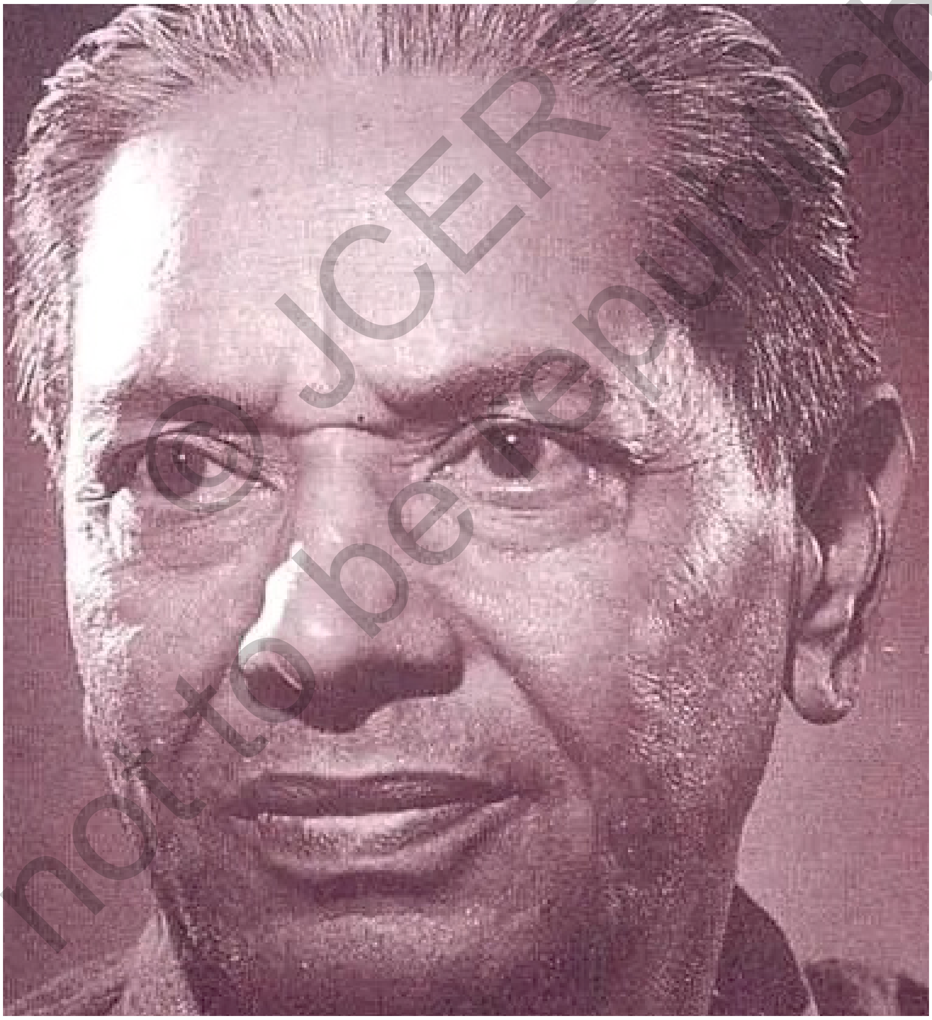

भवानी प्रसाद मिश्र

© JCERT not to be republished

कवि परिचय

भवानी प्रसाद मिश्र

जन्म- सन् 1913 ई.

जन्म-स्थान - टिगरिया गाँव, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

मृत्यु - सन् 1985 ई.

कविता और साहित्य सृजन के साथ-साथ राष्ट्रीय आंदोलन में भी सक्रिय रहे।

गांधीवाद पर आस्था रखने वाले मिश्र जी ने गांधी वाङ् मय के हिंदी खंडों का संपादन कर कविता और गांधीजी के बीच सेतु का काम किया।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविता हिंदी की सहज लय की कविता है। इस सहजता का संबंध गांधी के चरखे की लय से भी जुड़ता है इसलिए उन्हें 'कविता का गांधी' भी कहा गया है।

प्रमुख रचनाएँ:- सतपुड़ा के जंगल, सन्नाटा, गीतफ़रोश, चकित है दुख, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, इदं न मम् आदि।

प्रमुख सम्मान:- साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान, दिल्ली प्रशासन का गालिब पुरस्कार एवं पद्मश्री से अलंकृत।

भाषा शैली:- सरल, सहज, खड़ी बोली हिंदी भाषा है के प्रयोग से इनकी कविताएँ सरल, सहज, लयात्मक और बोधगम्य हैं।

© JCERT not to be republished

कविता परिचय

- घर की याद
- घर की याद कविता में कवि भवानी प्रसाद मिश्र के घर के मर्म का उद्घाटन हुआ है।
- कवि को जेल-प्रवास के दौरान घर से विस्थापन की पीड़ा सालती है। उन्हें अपने घर की याद सताती है।
- कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन, माता-पिता, भाई-बहन एक-एक कर शामिल होते चले जाते हैं।
- कवि के घर में माता-पिता के साथ-साथ चार भाई और चार बहने हैं।
- चारो भाई कवि के शक्ति हैं तो बहनें प्यार हैं।
- घर की अवधारणा की सार्थक और मार्मिक याद कविता की केंद्रीय संवेदना है।

© JCERT not to be republished

सप्रसंग व्याख्या :-

काव्यांश- 1

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात भर गिरता रहा है,
प्राण मन घिरता रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
घर नज़र में तिर रहा है,
घर कि मुझसे दूर है जो,
घर खुशी का पूर है जो,
घर कि घर में चार भाई,
मायके में बहिन आई,
बहिन आई बाप के घर,
हाय रे परिताप के घर।

घर कि घर में सब जुड़े हैं,

सब कि इतने कब जुड़े हैं,

चार भाई चार बहिनें,

भुजा भाई प्यार बहिनें,

शब्दार्थ:-

घिरता — बेचैन।

नज़र में तिर रहा है — आँखों के सामने दिखाई दे रहा है।

पूर है जो —पूर्ण है यानी खुशियों से भरा-पूरा है।

परिताप — अत्यधिक दुख।

जुड़े — बंधे।

प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग- 1 में संकलित, 'भवानी प्रसाद मिश्र' की कविता 'घर की याद' से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने 1942 में जेल-प्रवास के दौरान घर को याद करके अपने हृदय की पीड़ा का वर्णन किया है।

व्याख्या:— कवि ने जेल में रहते हुए रात के समय में वर्षा होने का वर्णन करते हुए कहा है कि आज बहुत वर्षा हो रही है। रात-भर वर्षा हो रही है। अत्यधिक वर्षा होने के कारण कवि के प्राण तथा मन बेचैन हो रहे हैं, क्योंकि कवि को वर्षा ऋतु में अपने घर की याद आ रही है। बहुत अधिक वर्षा होने के कारण कवि की आँखों के सामने घर का दृश्य दिखाई दे रहा है। वह घर जो कारावास में रहते हुए उससे दूर है। वह घर जो उसके लिए खुशियों का खजाना है। उसका घर माँ-बाप, भाई-बहनों से भरा-पूरा है।

उनके घर में चार भाई हैं और अब अपने मायके में रहने के लिए उसकी बहन भी आई होगी। उसकी बहन, पिता के घर में आई है। किन्तु यह घर दुःखों का घर बना हुआ है, क्योंकि कवि का घर में न होने के कारण बहन उन्हें याद कर दुःखी हो रही होगी।

मेरा घर जिस में मेरे बहन-भाई, माँ-बाप सभी स्नेह-सूत्र में बंधे हैं। किसी भी परिवार में इतना प्यार कब होता है? मेरे चार भाई और चार बहनें हैं। मेरे भाई मेरी भुजाएँ हैं अर्थात् शक्ति हैं और बहनें मेरा प्यार हैं।

विशेष:-

(क) इस काव्यांश में कवि ने जेल प्रवास के दौरान अपने घर को याद करते हुए अपनी हृदय की पीड़ा का वर्णन किया है।

(ख) 'घर' का बिम्बात्मक प्रयोग से घर का पूरा दृश्य आँखों के सामने दिखाई देने लगता है।

(ग) इस काव्यांश में सरल, सहज खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता सहज और बोधगम्य है।

(घ) पंक्तियाँ तुकांत होने के कारण कविता गेय है।

काव्यांश- 2

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,

दुःख में वह गढ़ी मेरी

© JCERT not to be republished

माँ कि जिसकी गोद में सिर,

रख लिया तो दुख नहीं फिर,

माँ कि जिसकी स्नेह-धारा,

का यहाँ तक भी पसारा,

उसे लिखना नहीं आता,

जो कि उसका पत्र पाता।

पिता जी जिनको बुढ़ापा,

एक क्षण भी नहीं व्यापा,

जो अभी भी दौड़ जाएँ,

जो अभी भी खिलखिलाएँ,

मौत के आगे न हिचकें,

शेर के आगे न बिचकें,

बोल में बादल गरजता,

काम में झंझा लरजता,

शब्दार्थ:—

गढ़ी — अत्यन्त दुखी।

व्यापा — आभास।

झंझा — तूफ़ान।

प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1 के अन्तर्गत 'भवानी प्रसाद मिश्र' द्वारा लिखित 'घर की याद' नामक कविता से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने अपने माता-पिता को याद कर उनसे दूर रहने के दुःख का वर्णन किया है।

व्याख्या:— कवि भवानी प्रसाद मिश्र अपने माता-पिता को याद करते हुए कहते हैं कि- मेरी माँ अनपढ़ है। वह मेरा घर से दूर यहाँ कारावास में रहने के कारण अत्यंत दुःखी है। मेरी माँ जिसकी गोद में सिर रख लो तो सभी सांसारिक दुःख समाप्त हो जाते हैं।

माँ जिसके स्नेह की धारा का यहाँ भी प्रवाह है अर्थात् यहाँ पर रहते हुए भी उसके दुलार का मैं अनुभव कर रहा हूँ। उसे लिखना नहीं आता है। अगर उसे लिखना आता तो अवश्य ही मैं उसका पत्र प्राप्त करता।

मेरे पिता, जिन को कभी वृद्धावस्था का आभास एक क्षण के लिए भी नहीं हुआ। जो अभी भी युवाओं की तरह दौड़ लगा सकते हैं। जो अभी भी युवाओं की तरह खिलखिला कर हँसते हैं। वे मौत को सामने देखकर भी भागते नहीं हैं तथा शेर को देखकर भी भयभीत नहीं होते। उनकी आवाज में बादल जैसी गर्जना है तथा काम में तूफान जैसी तेजी है।

विशेष:-

(क) इस काव्यांश में कवि नें अपनी माँ की ममता और अपने पिता की साहसिकता का चित्रण किया हैं।

(ख) 'बोल में बादल गरजता' तथा 'काम में झंझा लरजता' में अतिशयोक्ति अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(ग) सरल सहज खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता सहज और बोधगम्य है।

(घ) काव्यांश की पंक्तियाँ तुकांत होने के कारण कविता में संगीतात्मकता है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश- 3

आज गीता पाठ करके,

दंड दो सौ साठ करके,

खूब मुगदर हिला लेकर,

मूठ उनकी मिला लेकर,

जब कि नीचे आए होंगे,

नैन जल से छाए होंगे,

हाय, पानी गिर रहा है,

घर नज़र में तिर रहा है,

चार भाई चार बहिनें,

भुजा भाई प्यार बहिनें,

खेलते या खड़े होंगे,

नज़र उनको पड़े होंगे।

पिता जी जिनको बुढ़ापा,

एक क्षण भी नहीं व्यापा,

रो पड़े होंगे बराबर,

पाँचवें का नाम लेकर,

शब्दार्थ:-

नज़र में तिर रहा है – दिखाई देना।

बराबर – लगातार।

प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1 के अन्तर्गत 'भवानी प्रसाद मिश्र' द्वारा लिखित कविता 'घर की याद' से अवतरित है। इसमें कवि ने अपने पिता की धार्मिक आस्था तथा उसके विरह में दु:खी होने का वर्णन किया है।

व्याख्या:- कवि कहते हैं कि मेरे पिताजी ने आज सुबह उठकर गीता का पाठ किया होगा और फिर दो सौ साठ बार दंड बैठक लगाई होंगी। उसके बाद मुगदर द्वारा व्यायाम करते हुए उनकी मूठ को मिलाया होगा। जब पिता जी व्यायाम करने के बाद छत से नीचे आये होंगे तो उनकी आँखों में आँसू आ गये होंगे। अभी भी वर्षा हो रही है। मेरी आँखों के सामने मेरे घर का दृश्य दिखाई दे रहा है।

मेरे घर में चार भाई और चार बहनें हैं। मेरे भाई मेरी शक्ति हैं और बहनें मुझसे अत्यधिक प्यार करने वाली हैं। वे सभी खेलते हुए या खड़े हुए पिता जी को दिखाई दिए होंगे। मेरे पिताजी जिन्होंने कभी भी वृद्धावस्था का अहसास नहीं किया। वे मुझे वहाँ न देखकर रो पड़े होंगे क्योंकि उन्हें वहाँ पाँचवाँ यानी मैं (भवानी प्रसाद मिश्र) दिखाई नहीं दिया, इसीलिए वे मेरा (भवानी) नाम लेकर रोने लगे होंगे।

विशेष:-

(क) इस काव्यांश में कवि के पिता का धार्मिक प्रवृत्ति के होने का एवं कवि के प्रति अत्यधिक प्रेम का चित्रण हुआ है।

(ख) 'मुगदर हिला लेकर' तथा 'मूठ उनकी मिला लेकर' आदि में सुंदर बिम्बों का प्रयोग हुआ है।

(ग) काव्यांश में सरल सहज खड़ी बोली हिंदी

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

भाषा का प्रयोग हुआ है।

(घ) कविता में संगीतात्मकता है।

काव्यांश- 4

पाँचवाँ मैं हूँ अभागा,
जिसे सोने पर सुहागा,
पिता जी कहते रहे हैं,
प्यार में बहते रहे हैं,
आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उनपर सुहागा
बँधा बैठा हूँ अभागा,
और माँ ने कहा होगा,
दुःख कितना बहा होगा,
आँख में किस लिए पानी
वहाँ अच्छा है भवानी
वह तुम्हारा मन समझकर,
और अपनापन समझकर,
गया है सो ठीक ही है,
यह तुम्हारी लीक ही है,

शब्दार्थ:—

अभागा — भाग्यहीन।

स्वर्ण बेटे — सोने जैसे अमूल्य पुत्र।

हेटे — तुच्छ।

लीक — रास्ता।

प्रसंग:— प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1 में संकलित 'भवानी प्रसाद मिश्र' की कविता 'घर की याद' से उद्धृत है। इस काव्यांश में कवि ने अपने माता-पिता के दुःखों का चित्रण किया है।

व्याख्या:— कवि कहते हैं कि मैं पाँचवाँ अभागा हूँ अर्थात् यह मेरा दुर्भाग्य है कि जिसे पिता सोने पर सुहागा अर्थात् अपने सभी पुत्रों में श्रेष्ठ कहते रहे हैं। मेरे प्यार में बहकर वे प्रायः मुझे अपना सबसे प्रिय बेटा कहते थे, आज मैं यहाँ कारावास में हूँ।

आज उन्हें अपने चारों सोने जैसे बेटे मेरे घर में न होने के कारण तुच्छ लगे होंगे। क्योंकि मैं सोने पर सुहागा अर्थात् अत्यधिक प्रिय पुत्र यहाँ दुर्भाग्य के कारण जेल में बंद हूँ। पिता की दशा को देखकर मेरी माँ ने उन्हें समझाया होगा कि दुःखी मत हो। तुम्हारी आँख में आँसू क्यों हैं? वहाँ जेल में भवानी स्वस्थ है।

वह तुम्हारे मन की बात समझ कर और देश के प्रति अपनापन समझ कर देश हेतु जेल गया भी है तो कोई बात नहीं। क्योंकि ये आपके द्वारा दिखया गया देशभक्ति का मार्ग है।

विशेष:-

(क) इस काव्यांश में कवि अपने-आप को अभागा कह रहा है।

(ख) 'आँख में किस लिए पानी' और 'वहाँ अच्छा है भवानी' में बिंबात्मक प्रयोग हुआ है।

(ग) सरल और सहज खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता सहज और बोधगम्य है।

© JCERT not to be republished

(घ) इस काव्यांश की पंक्तियाँ तुकांत होने के कारण कविता संगीतात्मक है।

(ङ) यहाँ कवि तथा कवि के पिता की देशभक्ति की भावना का चित्रण हुआ है।

काव्यांश– 5

पाँव जो पीछे हटाता,
कोख को मेरी लजाता,
इस तरह होओ न कच्चे,
रो पड़ेंगे और बच्चे,
पिता जी ने कहा होगा,
हाय, कितना सहा होगा,
कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ,
धीर मैं खोता, कहाँ हूँ,
हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें,
मैं मज़े में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

शब्दार्थ:–

कोख – गोद।

कच्चे – दुर्बल, कमजोर।

धीर– धीरज।

विरस – आनन्द रहित।

प्रसंग:– प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1 में संकलित 'भवानी प्रसाद मिश्र' की कविता 'घर की याद' से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने अपने पिता की देश भक्ति की भावना तथा अपने विरह में दुःखी अवस्था का चित्रण किया है।

व्याख्या:– कवि भवानी प्रसाद मिश्र कहते हैं कि उनकी माँ ने पिता को समझाते हुए कहा होगा, 'यदि वह अपने पाँव पीछे हटाता तो मेरी कोख को अपमानित करता। इस तरह से दुखी होकर आप कमजोर न बनो।, आप को दुखी देखकर सभी बच्चे भी रोने लगेंगे।

पिता जी ने माँ के समझाने पर उत्तर दिया होगा कि मैं रो कहाँ रहा हूँ? ऐसा कहते हुए उन्होंने कितना दुख सहन किया होगा ? अर्थात् उनके ये शब्द बड़ी कठिनता से मुँह से निकले होंगे। मैं धैर्य कहाँ खो रहा हूँ?

हे सजीले हरे-भरे सावन ! तुम मेरे पवित्र कर्मों का फल हो। तुम चाहे कितनी भी वर्षा कर लो, लेकिन मेरे पिता की आँखों में आँसू नहीं आने चाहिए। पाँचवें के लिए यानी मेरे लिए वे दुःखी न हो। मैं यहाँ कारावास में मजे में और स्वस्थ हूँ, किन्तु मुझे केवल एक ही दुःख है कि मैं घर में नहीं हूँ। किन्तु यह दुःख बहुत बड़ा दुःख है, इसी के कारण सब कुछ विरस है।

विशेष:–

(क) इन पंक्तियों में कवि की माँ की देशभक्ति की भावना का चित्रण हुआ है।

© JCERT not to be republished

(ख) इस काव्यांश में सजीले हरे सावन का एक संदेशवाहक के रूप में चित्रण हुआ है।

(ग) 'पुण्य पावन' में अनुप्रास अलंकार तथा 'किंतु यह बस बड़ा बस है' में यमक अलंकार है।

(घ) भाषा सरल, सहज खड़ी बोली हिंदी है।

(ङ) पंक्तियाँ तुकांत होने के कारण कविता गेय हैं।

काव्यांश– 6

किंतु उनसे यह न कहना,
उन्हें देते धीर रहना,
उन्हें कहना लिख रहा हूँ,
उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ,
काम करता हूँ कि कहना,
नाम करता हूँ कि कहना,
चाहते हैं लोग कहना,
मत करो कुछ शोक कहना,
और कहना मस्त हूँ मैं,
कातने में व्यस्त हूँ मैं,
वज़न सत्तर सेर मेरा,
और भोजन ढेर मेरा,
कूदता हूँ, खेलता हूँ,
दुःख डट कर ठेलता हूँ,
और कहना मस्त हूँ मैं,
यों न कहना अस्त हूँ मैं,

शब्दार्थः –

शोक – दु:ख।

ठेलता – दूर करता।

अस्त – उदास।

प्रसंग:– प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1 में संकलित 'भवानी प्रसाद मिश्र' द्वारा रचित कविता 'घर की याद' से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने सावन की हवा के माध्यम से अपने घर में संदेश भेजा है।

व्याख्या:– कवि कहते हैं कि हे सावन की बहती हवा ! उनसे मेरी दुःखी अवस्था का वर्णन न करना। यह मत कहना कि मैं उन्हें याद करता हूँ। उन्हें धैर्य बंधाती रहना। उन्हें कहना कि मैं साहित्य लिखता और पढ़ता हूँ। उन्हें कहना कि मैं काम करता हूँ। उनका नाम अमर कर रहा हूँ। सभी लोग कारावास में मुझ से प्रेम करते हैं। इसीलिए मेरे कारण चिन्ता न करें और उन्हें यह बताना कि मैं मस्ती से यहाँ रहता हूँ। सूत कातने में व्यस्त रहता हूँ। मैं अब सत्तर किलो का हो गया हूँ और में बहुत सारा भोजन खाता हूँ।

यहाँ मैं खेलता- कूदता रहता हूँ। अगर कोई दुःख सामने आये तो उसे हिम्मत पूर्वक दूर करता हूँ और उन्हें कहना कि मैं मस्त हूँ। ऐसा न कहना कि मैं उन्हें याद करके दुःख से भर जाता हूँ।

विशेष:–

(क) इस काव्यांश में कवि नें सावन के हवा को संदेशवाहक बना कर अपने घर में झूठा

© JCERT not to be republished

संदेश भेजने का मार्मिक चित्रण किया है।

(ख) 'काम करता हूँ कि कहना' तथा 'सत्तर सेर' में अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(ग) सरल सहज खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता सहज एवं बोधगम्य है।

(घ) काव्यांश की पंक्तियों में तुकांत होने के कारण कविता गेय है।

काव्यांश –7

हाय रे, ऐसा न कहना,
है कि जो वैसा न कहना,
कह न देना जागता हूँ,
आदमी से भागता हूँ,
कह न देना मौन हूँ मैं,
खुद न समझूँ कौन हूँ मैं,
देखना कुछ बक न देना,
उन्हें कोई शक न देना,
हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें।

शब्दार्थ: –

बक – बोल।

शक – सन्देह।

प्रसंग:– प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग-1 में संकलित 'भवानीप्रसाद मिश्र' द्वारा लिखित कविता 'घर की याद' से अवतरित है। सावन की हवा को कवि ने संदेशवाहक के रूप में चित्रित किया है।

व्याख्या:– कवि सजीले हरे भरे सावन से निवेदन कर रहा है कि सजीले सावन ! जो मेरी वास्तविक स्थिति है उसे न बताना। यह मत कहना कि मैं जागता रहता हूँ और आदमी से मिलने से भी कतराता हूँ।

यह मत बताना कि मैं चुप रहता हूँ। मेरी हालत तो ऐसी है कि मैं खुद नहीं समझ पा रहा। लेकिन उन्हें कुछ भी ऐसा न कह देना जिससे उनके मन में कोई शक पैदा हो जाए। हे सजीले, सौंदर्यपूर्ण हरी-भरी सावन की ऋतु ! तुम मेरी पवित्र कर्मों का फल हो। तुम चाहे कितनी वर्षा करो किन्तु मेरे परिवारजन की आँखों में पाँचवें पुत्र भवानी को याद कर आँसू नहीं आने चाहिए।

विशेष:–

(क) इस काव्यांश में सजीले हरे सावन को संदेशवाहक बनाया गया है।

(ख) इस काव्यांश में कवि अपनी वास्तविक स्थिति का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है।

(ग) पूरे काव्यांश में कवि की बेचैनी का चित्रण हुआ है।

(घ) सरल और सहज खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता सर्वग्राह्य एवं बोधगम्य है।

(ङ) पंक्तियाँ तुकांत होने के कारण पूरी कविता संगीतात्मक है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास कविता के साथ

1. पानी के रात भर गिरने और प्राण-मन के घिरने में परस्पर क्या संबंध है?

उत्तर- 'पानी के रात भर गिरने' और 'प्राण-मन के घिरने' का परस्पर यह सम्बन्ध है कि वर्षा होने पर कवि भवानी प्रसाद मिश्र की आँखों के सामने घर के सभी सदस्यों माँ-बाप, भाई-बहनों की याद ताजा हो जाती है। घर से दूर कारावास में होने के कारण परिवार जन को याद कर कवि बेचैन हो उठता है।

2. मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' क्यों कहा है?

उत्तर- मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' इसलिए कहा है क्योंकि उस बहन का एक भाई कारावास में है। इसी कारण अपने भाई को घर में न पाकर वह दुःखी है।

3. पिता के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को उकेरा गया है?

उत्तर- भवानीप्रसाद मिश्र ने अपने पिता के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं को उकेरा है -

(क) कवि भवानी प्रसाद मिश्र के पिता देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है।

(ख) कवि के पिता धार्मिक प्रवृत्ति के हैं।

(ग) कवि के पिता कसरत एवम् व्यायाम में रुचि रखते हैं।

(घ) कवि के पिता हँसमुख एवम् बलवान हैं।

(ङ) कवि के पिता अपनी संतान को अत्यधिक स्नेह करते हैं।

4. निम्नलिखित पंक्तियों में 'बस' शब्द के प्रयोग की विशेषता बताइए।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियों में 'बस' शब्द के बार-बार प्रयोग द्वारा लयबद्धता का सुंदर प्रयोग हुआ है। काव्यांश सुमधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहा है, अतः गेयता विद्यमान है। बस का अर्थ 'केवल' तथा 'दु:ख' दो रूपों में प्रयोग हुआ है, अतः यमक अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है। 'बस' शब्द करुण रस की उत्पत्ति करता है। बार-बार 'बस' शब्द के प्रयोग द्वारा कवि के मन की बेचैनी का अहसास होता है।

प्रश्न 5. कविता की अंतिम 12 पंक्तियों को पढ़कर कल्पना कीजिए कि कवि अपनी किस स्थिति व मनःस्थिति को अपने परिजनों से छिपाना चाहता है ?

उत्तर- कविता की अंतिम 12 पंक्तियों में कवि स्वयं के परिवार से दूर रहने की बेचैन मनः स्थिति को अपने परिजनों से छिपाना चाहता है। वह अपने माता-पिता, बहन, भाइयों को याद कर अपने आप पर बार-बार अंकुश रखने की कोशिश करता है, लेकिन फिर भी उसकी आँखों से अश्रुधारा बह ही जाती है। यह स्मरण करके कि वह यह दूरी देश की खातिर सह रहा है फिर अपने मन को ढाढ़स देता है तथा अपना समय सूत कातने, साहित्य लिखने और पढ़ने में व्यतीत करना चाहता है। लेकिन अपनी इन सारी स्थितियों से कवि अपने परिजनों को अवगत नहीं कराना चाहता है।

© JCERT not to be republished

कविता के आस-पास

1. ऐसी पाँच रचनाओं का संकलन कीजिए जिसमें प्रकृति के उपादानों की कल्पना संदेशवाहक के रूप में की गई है।

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।

2. घर से अलग होकर आप घर को किस तरह से याद करते हैं? लिखें।

उत्तर- घर से अलग होकर तथा घर से दूर रहते हुए हम अपने परिजनों को याद करते हुए बेचैन हो जाते हैं। लम्बे समय तक परिजनों से दूरी बहुत ही कष्टदायक हो जाती है। अतः दूरभाष द्वारा अपने मन के भावों को अपने परिजनों को अभिव्यक्त करते हैं। उनकी प्यार-दुलार भरी यादों का स्मरण करते रहते हैं तथा जो हम अनुभव करते हैं उसे अपने परिजनों में बाँटकर अपना मन बहलाते हैं।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-उत्तर

1. कवि को अक्सर किसकी याद आती है ?

(क) परिवार की

(ख) मित्र की

(ग) पत्नी की

(घ) सगे-संबंधियों की

उत्तर- (क) परिवार की

2. जेल में कवि क्या करने में व्यस्त रहता है ?

(क) बागवानी में

(ख) दस्तकारी में

(ग) चित्रकारी में

(घ) कातने में

उत्तर- (घ) कातने में

3. जेल में कवि किससे भागता है ?

(क) अंधकार से

(ख) शोर से

(ग) आदमी से

(घ) बंदूक से

उत्तर- (ग) आदमी से

4. कवि कारावास में किसे संबोधित करता है ?

(क) सावन को

(ख) पिता को

(ग) बादल को

(घ) माता को

उत्तर- (क) सावन को

5. कवि ने किस स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया था?

(क) असहयोग आन्दोलन में

(ख) भारत छोड़ो आन्दोलन में

(ग) सविनय अवज्ञा आन्दोलन में

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (क) असहयोग आन्दोलन में

6. कवि के अनुसार किसकी आयु अधिक होने पर भी उनमें युवकों जैसा उत्साह था?

(क) पिता की

(ख) माता की

(ग) दादा की

(घ) दादी की

उत्तर- (क) पिता की

7. कवि किसकी गोद में सर रखकर अपने सरे दुःख भूल जाया करता था?

(क) माता की

(ख) पिता की

(ग) भाई की

(घ) बहन की

उत्तर- (क) माता की

8. कवि ने घर को किस से भरा-पूरा बताया?

(क) अन्न से

(ख) धन से

(ग) ख़ुशी से

(घ) परिवार से

उत्तर- (ग) ख़ुशी से

9. कवि को किस ऋतु में घर की याद आती थी?

(क) वसंत ऋतु में

(ख) ग्रीष्म ऋतु में

(ग) शरद ऋतु में

(घ) वर्षा ऋतु में

उत्तर- (घ) वर्षा ऋतु में

10. कवि की कितनी बहनें हैं ?

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) पाँच

(ग) चार

11. कवि के कितने भाई हैं?

(क) चार

(ख) तीन

(ग) दो

(घ) एक

उत्तर- (क) चार

© JCERT not to be republished

12. कवि ने भाई को क्या कहा है?

(क) भुजा

(ख) हाथ

(ग) पैर

(घ) मुँह

उत्तर- (क) भुजा

13. कवि के पिता के बोलने में किसकी गर्जना सुनाई देती थी?

(क) सिंह की

(ख) हाथी की

(ग) सुंदर की

(घ) बादल की

उत्तर- (घ) बादल की

14. कवि का घर किसका भण्डार है?

(क) धन का

(ख) अनाज का

(ग) खुशियों का

(घ) दुखों का

उत्तर- (ग) खुशियों का

15. कवि के भाई आपस में किसके कारण बहुत गहरे जुड़े हुए

हैं?

(क) पैसे के कारण

(ख) घर के कारण

(ग) ईर्ष्या के कारण

(घ) प्रेम के कारण

उत्तर- (घ) प्रेम के कारण

© JCERT not to be republished